REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

बौद्ध दर्शन में आचार संहिता :एक विमर्श

डॉ. चन्द्रशेखर रमण
+2 शिक्षक , दर्शनशास्त्र विभाग इंटर स्कूल, नारायणपुर, भागलपुर।

सारांश

बौद्ध दर्शन में बुद्ध की शिक्षाओं का सिंहावलोकन करते हुए विभिन्न धर्मो एवं विभिन्न चिन्तकों ने अपने– अपने ढंग से शिक्षा देते हैं। उसमें बुद्ध ने करूणा, प्रेम, समतामूलक, अहिंसा, स्वतंत्रता के साथ– साथ प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकवाद, अनात्मवाद, ब्रह्मविहार एवं पंचशील सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

इस दर्शन का तात्विक आधार "प्रतीत्यसमुत्पाद" है। इस दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद से क्षणिकवाद तथा क्षणिकवाद से अनात्मवाद प्रस्फूटित होता हे।

प्रथम आर्य सत्य मे वैज्ञानिक सोच प्रयोगात्मक होतें हैं। इस सोच को अपनाते हुए द्वितीय आर्य सत्य में उसके कारणों पर प्रकाश डाला है। तृतीय आर्य सत्य में कार्य– कारण तथा चतुर्थ आर्य सत्य में अष्टांगिक मार्ग की शिक्षा दी है।

इस शोध आलेख में बौद्ध धर्म की स्थापना एवं आर्य सत्यों से भारत– भूमि को उपदेशों से परिपूर्ण किया।उनके उपदेशों का प्रभाव इतना अधिक प्रबल रहा कि अनेक लोग उनके शरणागत हुए। बुद्ध के उपदेशों का प्रारंभ उनके बुद्धत्व– प्राप्ति से होता है। अतः, बुद्ध का वचन एवं संदेश आज भी मुझे प्रासंगिक प्रतीत होता है।

बौद्ध दशैन के संस्थापक महात्मा गौतम बुद्ध थे। बौद्ध दर्शन संसार को दुःख पूर्ण मानता है।इस दर्शन के चार आर्य सत्य है, दुःख, दुःख का कारण, दुःख निदान, दुःख निदान के मार्ग। दुःख का मूल कारण अज्ञान है। इसके कार्य– कारण की एक श्रृंखला है, जिसे द्वादश निदान कहते है।

"बुद्व एक समाज – सुधारक थे, दार्शनिक नहीं। दार्शनिक उसे कहा जाता है जो ईश्वर, आत्मा, जगत् जैसे विषयों का चिन्तन करता हो। जब हम बुद्व की शिक्षाओं का सिंहावलोकन करते हैं तो उसमें आचार–शास्त्र, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र आदि पाते हैं।"[1]

"आधुनिक चिन्तक प्रो0 पी0 लक्ष्मी नारसु ने बौद्व दर्शन के विषय में लिखा है कि –"ईसाइयों के लिए हठधर्मिता एवं चमत्कार ही बुद्विमत्ता है, मुसलमानों के लिए किस्मत और काल्पनिकता बुद्विमत्ता है, हिन्दु धर्म के लिए वर्ण और धर्मिक अनुष्ठान श्रेष्ठ है, जैनों के लिए संन्यास और नग्नता ही बुद्विमत्ता है, ताओवाद में रहस्यवाद और जादू– टोना ज्ञान है, कनफ्यूशियस के लिए औपचारिकतावाद एवं दया का दिखावा ज्ञान है लेकिन बौद्व विचारकों ने प्रेम,करूणा, भाईचारा, समतामूलक समाज,सद्भावना और दया जैसे दिव्य मानवीय को ही जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्वीकार किया है।"[2]

बुद्व का उद्देश्य एक ऐसी मानवतावादी दुनियाँ की पुनर्रचना करने का था, जहाँ करूणा, प्रेम, समतामूलक,अहिंसा एवं स्वतंत्रता व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बन सके। उन्होंने दुःखों की उत्पत्ति एवं निवृत्ति के आत्म साक्षात्कार की यात्रा में क्षणिकवाद, अनात्मवाद, प्रतीत्यसमुत्याद एवं ब्रह्म विहार जैसे सार्वभौम सिद्वान्त का प्रतिपादन किया है।

बुद्व ने पंचशील के माध्यम से लोगों के बीच उपदेश देते हैं, जो निम्न हैं–

1. **अहिंसा**:– बुद्व पंचशील के व्रतों का पालन करते हैं कि किसी भी जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए। यदि हत्या किये हुए जीव को नहीं जीवित कर सकते हो तो हत्या क्यों करते हो?
2. **सत्य**:– पंचशील के व्रत में सदा सत्य बोलने का पालन किया गया है, अप्रिय वचन का पालन नहीं किया गया है।
3. **अस्तेत**:– इस महाव्रत में भी चोरी नहीं करने का पालन किया गया है।
4. **ब्रह्मचर्य** :– इसमें कठोर तपस्या हेतु अपने इन्द्रियसंयम का पालन करना ही ब्रह्मचर्य व्रत कहलाते हैं।
5. **अपरिग्रह**:– अंतिम पंचशील महाव्रत में बुद्व बतलाते हैं कि लोभवंश अधिक धन– सम्पति न रखनी चाहिए। अधिक धन– सम्पति को दूसरों के पास बाँट देना चाहिए, न की अपने ही पास रखना चाहिए।

बुंद्व व्यवहारवादी, मानवतावादी,अनुभववादी और प्राकृतिक दार्शनिक थे इसलिए उनके चिन्तन के केन्द्र में मनुष्य एवं उसकी समस्याएँ थी। उनके दार्शनिक चिन्तन का उद्देश्य मानव जीवन की मूल समस्या दुःख, उसके कारण एवं उनसे मुक्ति के उपाय ढुँढ निकालना था। दुःख और उससे मुक्ति के उपाय यही बंद्व के दर्शन का उद्देश्य था।"[3]

तत्वमीमांसीय प्रश्नों का उत्तर ढूँढना उद्देश्य नहीं था, बल्कि मनुष्य के कष्टों, पीडाओं से जनित दुःख निवारण करना था। यही कारण है कि बुद्व ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक आदि से संबंधित प्रश्नों पर मौन हो जाते थे। वे तत्वमीमांसीय प्रश्नों को अर्थहीन, बेकार तथा अप्रासंगिक समझते थे। बुद्व जब यह शिक्षा देते हैं कि " संसार सांसारिक प्रक्रिया की अभिव्यक्ति है, ऐसे दर्शन में गोचर जगत् के पीछे स्वयंभू, अनन्त और शाश्वत ईश्वर या आत्मा की बात निरर्थक हो जाती है।"[4] उनकी ही दृष्टिकोण में दुःख से पीडित मानव के लिए आत्मा, जगत्, ईश्वर जैसे प्रश्नों के अनुसंधान में निमग्न रहना निरर्थक ही कहा जा सकता है। महात्मा बुद्व व्यावहारिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए दुःख और दुःख– निरोध पर ही अधिक जोर देते हैं।"[5]

बौद्व दर्शन का तात्त्विक आधार "प्रतीत्यसमत्पाद "है। यह बौद्व दर्शन का मेरूदण्ड कहलाते है। इस दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद से क्षणिकवाद की व्याख्या होती है और क्षणिवाद से अनात्मवाद प्रस्फूटित होता है। बौद्व दर्शन में आत्मा की सत्ता नहीं स्वीकारी गयी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बौद्व दर्शन में अनात्मवाद की प्रधानता है।

उपाधि के होने से कार्य उत्पन्न होता है और इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि उपाधि के न होने पर कार्य उपस्थित नहीं होता है। उपाधि के निरोध से कार्य का भी निरोध हो जाता है.....

"इमस्मिं असति इदं न होती ,
इमस्म निरोधा इदं निरूज्झति।"[6]

क्षणिकवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर और परिवर्त्तनशील है। जिस प्रकार एक दिखाई देने वाली दीप शिखा में भी वास्तव में प्रतिक्षण नयी लौ पहली लौ का स्थान ग्रहण करती है, उसी प्रकार प्रत्येक क्षण पविर्त्तनशील एवं क्षणिक है।

"यथा दुब्बुलक पस्से
यथा पस्से मरीचिकं एवं
लोकमवेक्खन्तं मच्युराजा न परसति।"[7]

संसार को पानी के बुलबुले के समान समझना चाहिए तथा मृग मरीचिका की तरह देखना, तो फिर मृत्युराज तुम्हें नहीं देखेगा। बुद्व ने क्षणिकवाद का उपदेश मनुष्य के अहंभाव को गलाने के लिए, विषय विमुख करने तथा विशुद्विमार्ग पर चलने के लिए दिया है।

अनात्मवाद के सम्बन्ध में बुद्व कहते हैं कि –" दुःख ही यहाँ है" किन्तु दुःखित कोई नहीं क्रिया है, किन्तु कारण नहीं निर्वाण है, किन्तु निवृत नहीं, मार्ग है, किन्तु पथिक नहीं है। अतः आत्मा नहीं है।"[8]

पुनः बुद्व कहते है कि जिस प्रकार यदि कोई व्यक्ति देश की सुन्दर स्त्री से प्रेम करता है, न तो उसके बारे में कुछ जानता है और न रूप, रंग और न उसके आकार प्रकार को ही जानता है, तो ऐसे पुरूष का आचरण सर्वथा हास्यास्पद है, जिस प्रकार आत्मा के गुण और धर्म को जाने बिना ही आत्मा को मानता है।"[9]

बुद्व ने अनात्मवाद का उपदेश अपने सेवक आनन्द को दिया। अनात्मवाद का उपदेश उन्होंने राहुल को दिया। अपने शिष्य पूर्ण को भी बुद्व ने अनात्मवाद का उपदेश दिया। एक बार बुद्व ने अनात्मवाद का उपदेश भिक्षुओं को दिया और कहा–" भिक्षुओं, जो तुम्हारा नहीं है, उसे छोड दो। उसका छोडना चिरकाल तक तुम्हारे हित और सुख के लिए होगा।"[10]

भगवान् तथगत ने अनात्मवाद का उपदेश किसी स्वतंत्र दार्शनिक सिद्वान्त के रूप में नहीं दिया, परन्तु कालान्तर में यह एक स्वतंत्र सिद्वान्त के रूप में मान्य हो गया। पाली निकायों में अनात्मवाद की किरणें बुद्व के नैतिक आदर्शवाद से प्रस्फुटित हुई है। जब बुद्व स्मृति प्रस्थानों का वर्णन करते हैं,चार आर्य सत्यों का निर्देशन करते हैं, प्रतीत्यसमुत्यन्न धर्मों की अनित्यता और दुःखमयता दिखाते हैं, वे अपने शिष्यों को अनाशक्तिवाद सिखाते हैं, उन्हें इन्द्रिय संयम में लगाते हैं, उसी समय वे अनात्मवाद के निरूपण में भी संलग्न दिखाई पडते हैं।

शिष्यों को वैज्ञानिक सिद्वान्तों के भाँति पहले परखने,तब स्पीकार करने का आह्वान किया। उनकी यह शिक्षा वैज्ञानिक सोच का प्रतिफल है। वैज्ञानिक सोच प्रयोगात्मक होते हैं। अगर हम महात्मा बुद्व के प्रथम आर्य सत्य की समीक्षा करें तब उसमें भी वैज्ञानिक सोच परिलक्षित होती है। उन्होंने स्वयं संसार में व्याप्त दुःखों का अनुभव किया तभी वैज्ञानिक सोच को अपनाते हुए द्वितीय आर्य सत्य में उसके कारणों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने इसके लिए द्वादशनिदान या प्रतीत्यसमुत्पाद का उपदेश दिया। महात्मा बुद्व ने तार्किक ढंग से तृतीय आर्य सत्य में कार्य– कारण के चक्र को तोडकर निर्वाण की अवस्था की प्राप्ति की व्याख्या की है। महात्मा बुद्व ने अपने शिष्यों को अष्टांगिक मार्ग की शिक्षा चतुर्थ आर्य सत्य में दी है। इन मार्गो का अनुसरण कर कोई भी व्यक्ति निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। वे मार्ग हैं– सम्यक दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् वाक्, सम्यक् स्मृति एवं सम्यक् समाधि।बुद्व ने स्वयं इन मार्गों का अनुकरण कर निर्वाण की प्राप्ति की थी। इनका विचार है कि प्रज्ञा, शील और समाधि अर्थात् अष्टांगिक मार्ग का आशय ग्रहण कर कोई भी व्यक्ति निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। व्यक्ति को स्वयं इसे जानना, परखना होगा और अपने ज्ञान के आधार पर अपने व्यवहार– आचार को सुसंगत बनाना होगा।बुद्व के इस संदेश में वैज्ञानिकता के यथेष्ट अंश हैं। उन्होंने अपने अनुयायियों को यही बताया कि निर्वाण बुद्वत्व की प्राप्ति उनके अनुभव प्रयोग और अनुसंधान का ही प्रतिफल है।

बुद्व ने लोक कल्याण संबंधी विचार की प्रासंगिकता काफी बढ गयी है। इन्होंने भिक्षुओं को लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर सर्वत्र भ्रमण करने की बात कही थी–

"चरण भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय।
लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय् सुखाय देव मनुस्सान।।"[11]

लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर स्वयं बुद्व ने अर्हत की प्राप्ति के पश्चात् जीवन पर्यन्त घूम–घूम कर अपने उद्देश्यों को जनता के बीच रखा। जिस नाव पर चढकर उन्होंने दुःख समुद्र को पार किया था, उस नाव को तोडने के बजाय अन्य लोगों के हित के लिए रखना आवश्यक समझा। बुद्व का विचार मानव समाज को सर्वमुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। वे परिवर्त्तन में विश्वास करने वाले महान मानवतावादी चिन्तक थे। शाश्वतवाद एवं आत्मवाद के स्थान पर क्षणिकवाद एवं अनात्मवाद को स्वीकार किया है।उनका कथन है–

"सर्वम् क्षणिकम् क्षणिकम्।"

व्यक्ति का जीवन एवं संसार की सारी वस्तुएँ क्षणिक, अस्थायी एवं परिवत्तनशील है।

वैष्णव धर्म में कहा है कि हम अपने कर्मों का भरोसा छोडकर भगवान की शरण में आ जाएँ यही जीवन मुक्ति का मार्ग है। ईसाई धर्म भी यह स्वीकार करता है कि "भगवान ईसा मसीह की कृपा होनी चाहिए, फिर

नरक की यातना नहीं मिल सकती।"इस्लाम धर्म में भी इस्लाम धर्मावलम्बियों को पैगम्बर के सिफारिश पर सभी पापों से मुक्ति की बात कही गई है। लेकिन महात्मा बुद्ध ने कहा है किः–

"आत्मदीपो भवः।"

अर्थत अपना प्रकाश खुद बनो की शिक्षा दी है। उनकी निश्चित धारणा थी कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है उनके वचन हैं– "तुम ही अपने स्वामी हो, '**अत्ता हि अत्तनो नाथे।**' किसी भी पर्वत, वन, वृक्ष, चैत्य आदि को देवता मानकर उसकी शरण में नहीं जाना चाहिए।"[12]

भगवान् बुद्ध ने सांसारिक ऐश्वर्य का त्याग किया और शांति तथा सौहार्द के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जिसे "ब्रह्मविहार" कहते है।

ब्रह्मविहार बुद्ध द्वारा उपदेशित है। इसका उपदेश व्यक्ति और समाज के बीच स्थापित किया था क्योंकि भारत में परस्पर विरोधी शक्तियाँ प्रचलित थी जैसे वर्ग, जाति, धर्म, भाषा, साधना, आचार, निष्ठा आदि के नाम पर है। बुद्ध कहते हैं कि शान्ति के समान कोई तप नहीं और द्वेष के समान कोई पाप नहीं। ब्रह्मविहार श्रेष्ठ जीवन पद्धति का वाहक है। मैत्री, करूणा, मुदिता और उपेक्षा ये चार ब्रह्मविहार के सोपान है।

(1) **मैत्री**:– यह शाश्वत सत्य है कि मैत्री की भावना से द्वैष का शमन होता है।
(2) **करूणा**:– यह सेवा का मूल मंत्र है।
(3) **मुदिता**:– इसका अभिप्राय हर्ष है जो दूसरों को सुख– सम्पन्नता देखकर प्रयन्नता होती है।
(4) **उपेक्षा**:– यह ब्रह्मविहार का चौथा और अंतिम सोपान हैं। उपेक्षा की भावना करने वाला व्यक्ति सभी जीवों के प्रति सम्भाव दृष्टि रखता है।

भगवान बुद्ध ने विश्व को शान्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रशस्त किया। बौद्ध दर्शन कल्याणकारी दर्शन है, जिसमें निर्वाण एवं निर्वाण प्राप्ति के मार्गों की विशद विवेचना की गई है। महायान बौद्ध साहित्य है **'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'** का नारा बुलन्द किया कि आज भी विश्व– शान्ति के लिए तथागत याद किये जाते है।

सिद्धार्थ बचपन से मैत्री और करूणा के समर्थक थे। इस सम्बन्ध में यह कहानी समीचीन और प्रासंगिक होता है। एक दिन सिद्धार्थ बगीचे में टहल रहे थे। बगीचे में टहलते हुए सिद्धार्थ ने एक हंस को घायल अवस्था में गिरते हुए देखा। उसने हंस को उठा लिया और उसके तन से लगा हुआ तीर निकालते हुए विचारा कि किस अधर्मी नें इसे मारा है? कुछ ही समय में सिद्धार्थ का फुफेरा भाई देवदत्त वहाँ आया और हंस को माँगने लगा। झगडे का फैसला राज्य सभा में पहुँचा। राजा ने कहा," मारने वाले से ज्यादा अधिकार बचाने वाला का होता है,इसलिए हंस पर सिद्धार्थ का हक सिद्ध होता है।"

मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी कविता में बुद्ध के प्रति समर्पण व्यक्त किया हैः

"तुम भिक्षुक बनकर आये थे गोपा क्या देगी स्वामी?"
था अनुरूप एक राहुल ही, रहे सदा यह अनुगामी ।
मेरे दुःख में भरा विश्व सुख, क्यों न मरूँ फिर मैं हामी।
बुद्धं शरणं, धम्मं शरणं, संघं शरणं गच्छामि।"[13]

अन्त में मै इस शोध आलेख के माध्यम से संक्षेप में निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि भगवान बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की तथा अपने आर्य सत्यों से भारत– भूमि को उपदेशों से परिपूर्ण किया।उनके उपदेशों का प्रभाव इतना अधिक प्रबल रहा कि अनेक लोग उनके शरणागत हुए। प्रतीत्यसमुत्पाद, पंचशील, क्षणिकवाद, अनात्मवाद, अनीश्वरवाद एवं ब्रह्मविहार बौद्ध दर्शन में महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। बुद्ध के उपदेशों का प्रारंभ उनके बुद्धत्व– प्राप्ति से होता है। बुद्ध मानवता की उन थोडी महानताओं में से हैं, जिन्होंने आर्य सत्यों का संदेश देकर युग परिवर्त्तन किया है। अतः, बुद्ध का वचन एवं संदेश आज भी मुझे प्रासंगिक प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1983,पृ0 94
2. नारसु, प्रो0 पी0 लक्ष्मी, बौद्ध धर्म का सार, 1907,पृ0 5
3. धम्मपद, 1/188
4. डेविडस, रीज, डायलॉग्स ऑफ दि बुद्धा, पृ0 45
5. वही, पृ0 159
6. मज्झिम निकाय, 1/264
7. धम्मपद, 13/4
8. दि सेन्ट्रल कन्सेप्शन ऑफ बुद्विज्म, बी0 एस0 भट्टाचार्य, पृ0 91
9. दीध निकाय, पृ0 73
10. मज्झिम निकाय, 1/3/2
11. महावग्गो, 1/2/5
12. संयुक्त निकाय खन्धक वग्गो, वक्कलिसुत्त, नालन्दा संस्करण, पृ0 341
13. सम्पादक, डॉ0 श्री प्रसाद,बुद्ध काव्यांजलि, केन्द्रीय उच्च तिब्बति शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, पृ0 32

डॉ. चन्द्रशेखर रमण
+2 शिक्षक , दर्शनशास्त्र विभाग इंटर स्कूल, नारायणपुर, भागलपुर।

LBP PUBLICATION